International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 04, October - December, 2020, pp.29-32

संतरैदास एवं सामाजिक समरसता

डॉ. श्रीराम बड़कोदिया*

शोध–सार

हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल का आन्दोलन जो समता, समानता, विश्वबन्धुत्व, सर्वजन हिताय, सर्वकल्याणक, प्राणी मात्र का कल्याण, मानवता आदि के उर्वरकों से निसृत था, भक्तिकाल हिन्दी में 'स्वर्णकाल' के नाम से जाना जाता है। इस काल के साहित्य में मानव को केन्द्र में रखकर उसके कल्याण के लिए साहित्य लिखा गया। भक्तिकाल के साहित्य ने मानव में छुपी हुई बुराईयों को निकालकर उसका परिमार्जन करने का कार्य किया है और इस कार्य में भक्तिकाल के सन्तों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है क्योंकि उन्होंने जनता के सामने अपने स्वयं की पवित्रता, सादा जीवन, आचरण की शुद्धता का आदर्श जनता के सम्मुख प्रकट किया है। ''जाति–पांति पूंछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई'' नामक आन्दोलन चलाने वाले स्वामी रामानंद के प्रमुख बारह शिष्यों में से प्रिय शिष्य थे सन्त गुरू रैदास। जाति–पाति, छूआ छूत, ऊंच–नीच, खान–पान, स्त्री–पुरूष के भेदभाव से परे मानव को मानव रूप में सम्मान और स्थान देने का नाम ही सन्त परम्परा है। संत तो सबके होते है क्या अपना क्या पराया। नाम का सुमिरन ही उनका ज्ञान है, वही भक्ति है वही कर्म है। सन्त रैदास सामाजिक समता, समरसता के सबसे बड़े पक्षधर रहे है। उन्होंने अपनी वाणी में मानव एक है। वह उसी परमतत्व ईश्वर की उपज है, का संदेश दिया है। वे हिन्दू और मुसलमानों से प्रेम की भावना से देखते है। वे कहते है कि मुसलमान से हमें दोस्ती करनी चाहिए तथा हिन्दुओं से प्रेम अर्थात् दोस्ती रखनी चाहिए। वे मानते है कि हिन्दू और मुसलमान सभी एक ही ज्योति की उपज है। हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही परमपिता परमेंश्वर की संताने है। इसलिए दोनों से ही प्रेम करना चाहिए।

प्रस्तावना

सन्त रैदास का जन्म काशी के निकट माडुरग्राम में माघ पूर्णिमा विक्रमी संवत 1433 को पिता रघु तथा माता कर्मा की कोख से हुआ। सन्त रैदास की जीवनीके संबंध में ऐतिहासिक कही जाने वाली सामग्री बहुत कम और शायद नगण्य है। जन्म मृत्यु की तिथियों व स्थानों के बारे तो मतभेद है ही साथ ही मां–बाप के नामों के बारे में भी मतभेद है,रैदास रामायण के रचयिता राजा राम मिश्र तथा श्री चन्द्रिका प्रसाद 'जिज्ञासु' ने अपनी रचना 'संत प्रवर रैदास साहब रामायण' में संत रैदास के पिता का नाम 'राहू' तथा माता का नाम 'करमा' माना है। ''जाति–पांति पूंछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई'' नामक आन्दोलन चलाने वाले स्वामी रामानंद के प्रमुख बारह शिष्यों में से प्रिय शिष्य थे सन्त गुरू रैदास। जाति–पाति, छूआ छूत, ऊंच–नीच, खान–पान, स्त्री–पुरूष के भेदभाव से परे मानव को मानव रूप में सम्मान और स्थान देने का नाम ही सन्त परम्परा है। संत तो सबके होते है क्या अपना क्या पराया। नाम का सुमिरन ही उनका ज्ञान है, वही भक्ति है वही कर्म है।

संत कुलभूषण कवि रैदास उन महान् सन्तों में अग्रणी थे। जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। इनकी रचनाओं की विशेषता लोक–वाणी का अद्भुत प्रयोग रही है। जिससे जनमानस पर इनका अमिट प्रभाव पड़ता है। मधुर एवं सहज संत रैदास की वाणी ज्ञानाश्रयी होते हुए भी ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी शाखाओं के मध्य सेतु की तरह है। प्राचीनकाल से ही भारत में विभिन्न धर्मों तथा मतों के अनुयायी निवास करते रहे हैं। इन सबमें मेल–जोल और भाईचारा बढ़ाने के लिए सन्तों ने समय–समय पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे सन्तों में रैदास का नाम अग्रगण्य है। वे सन्त कबीर के गुरूभाई थे, क्योंकि उनके भी गुरु स्वामी रामानन्द थे।

---

[6] सह–आचार्य, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सांभरलेक, जयपुर, राजस्थान।

साहित्यिक साधना

सन्त रैदास मध्ययुगीन इतिहास के संक्रमण काल में हुए थे। ब्राह्मणों की पैशाविक मनोवृत्ति से दलित और उपेक्षित पशुवत जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य थे। यह सब उनकी मानसिकता को उद्वेलित करता था। सन्त रैदास की समन्वयवादी चेतना इसी का परिणाम है। उनकी स्वानुभूतिमयी चेतना ने भारतीय समाज में जागृति का संचार किया और उनके मौलिक चिन्तन ने शोषित और उपेक्षित शूद्रों में आत्मविश्वास का संचार किया। परिणामत: वह ब्राह्मणवाद की प्रभुता के सामने साहसपूर्वक अपने अस्तित्व की घोषणा करने में सक्षम हो गये। सन्त रैदास ने मानवता की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। सन्त रैदास के मन में इस्लाम के लिए भी आस्था का समान भाव था। कबीर की वाणी में जहाँ आक्रोश की अभिव्यक्ति है, वहीं दूसरी ओर सन्त रैदास की रचनात्मक दृष्टि दोनों धर्मों को समान भाव से मानवता के मंच पर लाती है। सन्त रैदास वस्तुत: मानव धर्म के संस्थापक थे।

सामाजिक प्रभाव

रैदास की वाणी, भक्ति की सच्ची भावना, समाज के व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम से ओत–प्रोत होती थी। इसलिए उनकी शिक्षाओं का श्रोताओं के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था। उनके भजनों तथा उपदेशों से लोगों को ऐसी शिक्षा मिलती थी। जिससे उनकी शंकाओं का सन्तोषजनक समाधान हो जाता था और लोग स्वत: उनके अनुयायी बन जाते थे। उनकी वाणी का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि समाज के सभी वर्गों के लोग उनके प्रति श्रद्धालु बन गये। कहा जाता है कि मीराबाई उनकी भक्ति–भावना से बहुत प्रभावित हुईं और उनकी शिष्या बन गयी थीं।

'वर्णाश्र अभिमान तजि, पद रज बंदहिजासु की।
सन्देह–ग्रन्थि खण्डन–निपन, बानि विमुल रैदास की।।'

सन्त रैदास सामाजिक समता, समरसता के सबसे बड़े पक्षधर रहे है। उन्होंने अपनी वाणी में मानव एक है। वह उसी परमतत्व ईश्वर की उपज है, का संदेश दिया है। वे हिन्दू और मुसलमानों से प्रेम की भावना से देखते है। वे कहते है कि मुसलमान से हमें दोस्ती करनी चाहिए तथा हिन्दुओं से प्रेम अर्थात् दोस्ती रखनी चाहिए। वे मानते है कि हिन्दू और मुसलमान सभी एक ही ज्योति की उपज है। हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही परमपिता परमेंश्वर की संताने है। इसलिए दोनों से ही प्रेम करना चाहिए।

e|lyku lk nklrh] fgUn|vu lk dj ihrA
jnkl tkfr le jke dh] uHk g viu ehrAA

जब लोगों ने गुरूजी के साथ तर्क देते हुए हिन्दु, मुसलमान में भेदभाव दर्शाया तब उन्हें तीखा उत्तर देते हुए महाराज जी ने कहा, शरीर का सब कुछएक जैसे है फिर हिन्दू और मुसलमान अलग–अलग कैसे हुए इसलिए हिन्दू मुसलमान सभी एक ही हुए।

tc lHk dfj gkFk i=] nkm uu nkm dkuA
jnkl iFke dl Hk;] fgUn| e|lykuAA

संत दादू ने भी मनुष्य निर्माण के लिए दादूवाणी में लिखा है कि–

vYyg jke NVk Hke ekjk
fgUn| efLye Hkn dN ukgh
n[k n'ku rkjk
lkg ik.k fi.M ifu lkb
lkg ykgh ek lk
lkg uu&ukfldk lkb
lgt dhUg reklk-------- nkn ok.kh

संत कवि रैदास जो काफी विचार करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि मनुष्य जाति में सभी एक समान है। मनुष्य जाति में कोई भेदभाव या अंतर नहीं होता। मानव के बीच सामाजिकता की भावना लाने के लिए सभी को एक समान समझाना चाहिए। वे कहते है कि हिन्दू और मुसलमानों का सृष्टिकर्ता एक ही है, फिर इनमें अंतर करना सामाजिक विद्वेष को बढ़ाना होगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सभी दृष्टि का और सभी सृष्टिकर्ता एक ही भगवान है

jinkl if[k;k lk/k dfj] vkne lHkh lekuA
fgUnq eqlyeku dm] fl"Vk bd gh HkxokuA

संत कवि रैदास ने समस्त प्राणियों को एक ही परमपिता परमेश्वर की देन बताते हुए कहा है कि इन समस्त सृष्टि का कर्ता तो एक ही है और सभी के अन्तर मन में भी उसी का वास है फिर ये भेदभाव क्यो? इससे स्पष्ट होता है कि संत कवि रैदास जी सब प्राणियों को एक बताते हुए एकता की भावना रखते है और समाज में एकता लाना चाहते है। इस प्रकार उनका कदम सामाजिक एकता की भावना जगाता है

jinkl tks djrk flfjfLV dk] og rks djrk ,dA
lHk efg tkfr l:i bd] dkgs dgq vusdAA

सामाजिक समरसता तो आज भी हमारे समाज में एक पहेली बनी हुई है। 600 वर्ष पूर्व भी तत्कालीन समाज में समरसता के लिए प्रयास चलते रहते थे। सामाजिक समरसता या मानवतावादी दृष्टिकोण स्थापित करने के लिए उन्होंने भक्तिमार्ग का अवलम्बन लिया और उसका चहुंओर प्रचार–प्रसार किया।

Hkxfr u eqM eqMk;] Hkxfr u ekyk fn[kkbA
Hkxfr u pj.k /kkok,] ,s lc xquh tu xkbAA
dgs jinkl gqjh lc =kl] rc gfj rkgh ds iklA
vkRek fFkj xbZ rc] lc gh fuf/k ikbAA

उन्होंने कण कण में व्याप्त ईश्वर तथा एक ओंकार नाम की महिमा स्थापन हेतु वह कहते है–

dgs jinkl les rc] les tqxx yfV;kA
ge rÅ ,djke dfg NqfV;kA

विक्रम संवत 1584 में भारत का यह महान संत एवं कर्मयोगी पंच तत्वों में सदा के लिए विलीन हो गया। भौतिक शरीर भौतिक तत्वों में मिला लेकिन उनकी ज्ञान ज्योति असंख्या मानवों का पथ प्रदर्शन करती है। भारत भूमि में फैली साम्प्रदायिकता, जाति व वर्णव्यवस्था की कुत्सित भावनाएं, वर्ग विरोध, घृणित राजनीति से पावन धरती आज भी प्रदूषित है। आज फिर आवश्यकता है गुरू रैदास महाराज जैसे महान सन्त की, जो मानव एकता, मानव प्रतिष्ठा, सहिष्णुता और मानव को मानव के प्रति सम्मान करना सिखाये, जो राष्ट्रीय एकता के गीत गाये, भाई चारा बढ़ाये, ज्ञान ज्योति जलाये। वस्तुतः सन्त न किसी एक धर्म के होते है न किसी एक वर्ण या जाति के, वे तो सम्पूर्ण मानवता के उद्धारक होते है। अंत में संत रैदास ने फिर अपनी पवित्र वाणी के माध्यम से बताया है कि

tkfr ds c/ku dkV ds] fn;k Kku idk'kA
lHkh HkDr leju dj] t; t; lar jinklAA

सामाजिक महत्व

आज भी सन्त रैदास के उपदेश समाज के कल्याण तथा उत्थान के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधार पर महान् नहीं होता है। विचारों की श्रेष्ठता, समाज के हित की भावना से प्रेरित कार्य तथा सद्व्यवहार जैसे गुण ही मनुष्य को महान् बनाने में सहायक होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण सन्त रैदास को अपने समय के समाज में

अत्याधिक सम्मान मिला और इसी कारण आज भी लोग इन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। संत कवि रैदास उन महान् सन्तों में अग्रणी थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। इनकी रचनाओं की विशेषता लोक–वाणी का अद्‌भुत प्रयोग रही हैं। जिससे जनमानस पर इनका अमिट प्रभाव पड़ता है।

मधुर एवं सहज संत रैदास की वाणी ज्ञानाश्रयी होते हुए भी ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी शाखाओं के मध्य सेतु की तरह है। गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी रैदास उच्च–कोटि के विरक्त संत थे। उन्होंने ज्ञान–भक्ति का ऊँचा पद प्राप्त किया था। उन्होंने समता और सदाचार पर बहुत बल दिया। वे खंडन–मंडन में विश्वास नहीं करते थे। सत्य को शुद्ध रूप में प्रस्तुत करना ही उनका ध्येय था। रैदास का प्रभाव आज भी भारत में दूर–दूर तक फैला हुआ है। इस मत के अनुयायी रैदासी या रविदासी कहलाते हैं।

रैदास की विचारधारा और सिद्धांतों को संत–मत की परम्परा के अनुरूप ही पाते हैं। उनका सत्यपूर्ण ज्ञान में विश्वास था। उन्होंने भक्ति के लिए परम वैराग्य अनिवार्य माना जाता है। परम तत्त्व सत्य है, जो अनिवर्चनीय है –'यह परमतत्त्व एकरस है तथा जड़ और चेतन में समान रूप से अनुस्यूत है। वह अक्षर और अविनश्वर है और जीवात्मा के रूप में प्रत्येक जीव में अवस्थित है। संत रैदास की साधनापद्धति का क्रमिक विवेचन नहीं मिलता है। जहाँ–तहाँ प्रसंगवश संकेतों के रूप में वह प्राप्त होती है।' विवेचकों ने रैदास की साधना में 'अष्टांग' योग आदि को खोज निकाला है। संत रैदास अपने समय के प्रसिद्ध महात्मा थे। कबीर ने संतनि में रविदास संत' कहकर उनका महत्त्व स्वीकार किया इसके अतिरिक्त नाभादास, प्रियादास, मीराबाई आदि ने रैदास का ससम्मान स्मरण किया है। संत रैदास ने एक पंथ भी चलाया, जो रैदासी पंथ के नाम से प्रसिद्ध है। इस मत के अनुयायी पंजाब, गुजरात, उत्तर प्रदेश आदि में पाये जाते हैं।

I nHk xUFk I ph

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बेक्स, नोयडा, दिल्ली
2. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. संत रैदास –योगेन्द्र सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. सामाजिक समरसता – के सूर्यनारायण राव, ज्ञान गंगा प्रकाशन, जयपुर
5. सन्त रैदास– विवेक मोहन, राजा पाकेट बुक्स, बुराड़ी दिल्ली
6. श्री दादूवाणी, दयाल महासभा, जयपुर हिन्दी नागरिक प्रचारिणी सभा, वाराणसी
7. श्री दादू अमृतवाणी, स्वामी रामसुखदास

❖◆❖